बच्चों के भविष्य का सवाल

ऐसा ही एक अहम मोर्चा है उन बच्चों का जिनके माता–पिता दोनों इस महामारी का शिकार हो गए। अब तक माता–पिता के संरक्षण वाले प्यार भरे माहौल में पल बढ़ रहे इन बच्चों के लिए महामारी ऐसी विपदा बन कर आई जिसका कोई ओर–छोर ही न रहा।

मनोज शर्मा।।

यह देखना राहत देता है कि कोरोना महामारी के बीच अनाथ हुए बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने की चिंता देश में सर्वोच्च स्तर पर की जा रही है। न केवल प्रधानमंत्री ने इसके लिए योजनाओं की घोषणा की बल्कि सुप्रीम कोर्ट की देखरेख में इसकी मोडैलिटी तय करने का काम हो रहा है। दरअसल, कोविड जैसी महामारी अपने साथ कई तरह की चुनौतियां लेकर आती हैं। ऐसा ही एक अहम मोर्चा है उन बच्चों का जिनके माता–पिता दोनों इस महामारी का शिकार हो गए। अब तक माता–पिता के संरक्षण वाले प्यार भरे माहौल में पल बढ़ रहे इन बच्चों के लिए महामारी ऐसी विपदा बन कर आई जिसका कोई ओर–छोर ही न रहा। कल को वायरस का खतरा पूरी तरह समाप्त हो जाए, तब भी इन बच्चों की दुनिया और इनका जीवन पहले जैसा नहीं होने वाला। सबसे बड़ा सवाल तो यही है कि इन बच्चों के खाने–पीने, रहने–सहने और पढ़ने–लिखने की क्या व्यवस्था होगी। पहले की पीढियों की बात करें तो संयुक्त परिवार के चलन के कारण कम से कम भावनात्मक स्तर पर ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

एकल परिवारों के मौजूदा दौर में बच्चे आम तौर पर परिवार के अन्य सदस्यों के साथ न ज्यादा घुले–मिले होते हैं और न ही उनका खास भावनात्मक जुड़ाव होता है। ऐसे में इन बच्चों की स्नेहपूर्ण माहौल में सही देखरेख सुनिश्चित करना सचमुच एक बड़ी चुनौती है। अच्छी बात यह है कि प्रधानमंत्री द्वारा घोषित योजना में तात्कालिक जरूरतों या पढ़ाई की व्यवस्था तक सीमित एकांगी नजरिया नहीं है। इसमें बच्चों के संपूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए वयस्क होने की उम्र 21 साल से भी आगे 23 साल तक उनका ख्याल रखने की व्यवस्था की गई है। यह भी ध्यान देने लायक बात है कि इस योजना में कोरोना से मौत की शर्त नहीं रखी गई है।

इस अवधि में किसी भी वजह से माता–पिता दोनों को या किसी एक को भी, जो परिवार का इकलौता कमाऊ सदस्य हो, गंवाने वाले बच्चे इस योजना में शामिल किए जा रहे हैं। मगर योजना चाहे कितनी भी अच्छी क्यों न हो, असल सवाल उस पर अमल का है। मौजूदा मामले में भी ऐसे बच्चों को सरकारी बाल संरक्षण गृहों में रखे जाने की बात है, जिनका परिवार परवरिश की जिम्मेदारी लेने की स्थिति में नहीं है।

सरकारी बाल संरक्षण गृहों की हालत समझने के लिए मुजफ्फरपुर शेल्टर कांड जैसी घटनाओं पर नजर डालना जरूरी नहीं है। जहां ऐसा कोई चर्चित कांड नहीं हुआ है, वहां के हालात के बारे में जब तब आने वाली खबरें राज खोलती रहती हैं। ऐसे में बेहतर विकल्प वैसी संस्थाएं हो सकती हैं, जो बच्चों के कल्याण कार्यों से जुड़ी हुई हैं और अपनी साख बना चुकी हैं। इन बच्चों को उन्हें सुपुर्द किया जा सकता है और सरकार उनकी मदद कर सकती है। केंद्र को यह भी देखना होगा कि ऐसी पहल राष्ट्रीय स्तर पर हो और लगातार उसकी प्रगति पर नजर रखी जाए। इन बच्चों के प्रति यह हमारी जवाबदेही है।

संध्यावंदन

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

संध्यावंदन है प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य। संध्या वंदन को संध्योपासना भी कहते हैं। मंदिर में जाकर संधि काल में ही संध्या वंदन की जाती है। वैसे संधि आठ वक्त की मानी गई है। उसमें भी पांच महत्वपूर्ण है। पांच में से भी सूर्य उदय और अस्त अर्थात दो वक्त की संधि महत्वपूर्ण है। अतरू संध्याकाल में मंदिर या एकांत में शौच, आचमन, प्राणायामादि कर गायत्री छंद से निराकार ईश्वर की प्रार्थना की जाती है। संध्योपासना के चार प्रकार है– 1.संध्यावंदन, 2.प्रार्थना–ध्यान, 3.कीर्तन–भजन और 4. पूजा–आरती। व्यक्ति की जिस में जैसी श्रद्धा है वह वैसा करता है। शास्त्रों के अनुसार मंदिर में संध्यावंदन या संध्योपासना के ही नियम बताए गए हैं। इसके भी कुछ प्रकार और विधि होते हैं।

संपादकीय

हॉकी भी पीछे नहीं

महिला हॉकी की जहां तक बात है तो इसका इतिहास पुरुष टीम जैसा चमकदार नहीं है। महिला टीम ने 1980 के मॉस्को ओलिंपिक से ही भाग लेना शुरू किया है। पिछले ओलिंपिक में टीम अंतिम स्थान पर रही थी। इस बार भी टीम पूल मैचों में नीदरलैंड, जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन से हारी तो लगा कि वह क्वॉर्टर फाइनल में भी स्थान शायद ही बना सके। लेकिन आखिरी दो मैचों में आयरलैंड और दक्षिण अफ्रीका को हराकर क्वॉर्टर फाइनल में स्थान बनाने के बाद अब तीन बार की चौंपियन ऑस्ट्रेलिया को हराकर महिला टीम ने इतिहास रच दिया है। भारतीय महिला टीम इस ओलिंपिक में धीरे–धीरे निखरकर आ रही है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आखिरी पूल मैच में वंदना कटारिया ने हैट्रिक जमाई। लेकिन यह कहना भी गलत नहीं होगा कि ओलिंपिक मुकाबलों में अतीत के प्रदर्शनों का कोई मतलब नहीं रह जाता। इसमें खेलने का हर टीम के ऊपर एक अलग ही दबाव रहता है। जो टीम इस दबाव से निपटने में कामयाब हो जाती है, सफलता उसी के कदम चूमती है। वह भारत के लिए ओलिंपिक में हैट्रिक जमाने वाली इकलौती भारतीय महिला हैं। बहरहाल, महिला टीम के सेमीफाइनल में स्थान बना लेने से अब उसकी भी गिनती दुनिया की दिग्गज टीमों में होने लगेगी।

तोक्यो में करिश्मा सिर्फ पुरुष हॉकी टीम ने ही नहीं किया है, महिला टीम ने भी ऑस्ट्रेलिया जैसी दिग्गज टीम को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई।

कोच ने किया कमाल

मनोज चतुर्वेदी।।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के 49 साल बाद ओलिंपिक सेमीफाइनल में जगह बनाने से देशभर में खुशी का माहौल है। भारतीयों का हॉकी से भावनात्मक लगाव है, जो ओलिंपिक खेलों में 1928 से 1964 तक बादशाहत कायम रहने से पैदा हुआ। भारत की हॉकी टीम 1972 के म्यूनिख ओलिंपिक में आखिरी बार सेमीफाइनल में पहुंची थी। इसके बाद 1980 के मॉस्को ओलिंपिक में उसने स्वर्ण पदक जीता, लेकिन तब फॉर्मेट ऐसा था कि सेमीफाइनल मैच नहीं हुए थे। इसके बाद दशकों तक भारतीय हॉकी में गिरावट का दौर चला। इस बीच, ओलिंपिक में कभी टीम आखिरी स्थान पर रही तो कभी उसके लिए क्वॉलिफाई तक नहीं कर पाई। इस बार सेमीफाइनल में टीम के पहुंचने से लग रहा है, जैसे भारत ने पुराना गौरव हासिल कर लिया हो। तोक्यो में करिश्मा सिर्फ पुरुष हॉकी टीम ने ही नहीं किया है, महिला टीम ने भी ऑस्ट्रेलिया जैसी दिग्गज टीम को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई।

भारतीय हॉकी के स्तर में सुधार के लिए पिछले वर्षों के दौरान कई विदेशी कोच लाए गए, लेकिन उन्हें खास सफलता नहीं मिली। इस बार जो टीम सेमीफाइनल में पहुंची है, वह भी एक विदेशी कोच ग्राहम रीड की देखरेख में तैयार

हुई है। इस कोच ने टीम में जो आत्मविश्वास भरा है, उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। खासतौर पर भारत ने ऑस्ट्रेलिया के साथ दूसरा मैच जिस तरह से गंवाने के बाद टूर्नामेंट में वापसी की, वह कोई मजबूत मनोबल वाली टीम ही कर सकती थी। भारतीय हॉकी टीम ने पहले मैच में न्यूजीलैंड को हराकर तोक्यो ओलिंपिक में शानदार शुरुआत की थी। ब्रिटेन के खिलाफ क्वॉर्टर फाइनल में भारत ने मैच के तीसरे और चौथे क्वॉर्टर में विपक्षी टीम द्वारा बनाए दबाव में बिखरने की बजाय मुस्तैदी के साथ बचाव किया और फिर आखिरी मिनट में गोल जमाकर बढ़त को मजबूत कर लिया। इससे पता चलता है कि टीम के इरादे कितने मजबूत हैं। आम तौर पर हमारे डिफेंडर बचाव में लड़खड़ा जाते थे, जिसका फायदा उठाकर सामने वाली टीमें हार को जीत में बदल लिया करती थीं। मौजूदा टीम को देखकर लगता है कि अब उनके लिए ऐसा करना मुश्किल होगा।

इस टीम में एक और खूबी देखने को मिली। पहले हम बढ़त बनाने के बाद डिफेंसिव हो जाया करते थे, लेकिन ग्राहम रीड की इस टीम ने बढ़त बनाने के बाद अच्छा बचाव करने के साथ हमले भी जारी रखे। टीम में यह बदलाव खिलाड़ियों की अच्छी फिटनेस की वजह से आया है। पहले भारतीय टीम खराब फिटनेस के कारण भी दिक्कतें झेलती थी। अब हमारे खिलाड़ी इस मामले में किसी भी टीम से कम नहीं हैं। उनमें पूरे 60 मिनट एक ही गति से खेलने की क्षमता है। इसमें बड़े पैमाने पर होने वाली सब्स्टिट्यूशन और खेल के 15–15 मिनट के चार क्वॉर्टरों ने भी अहम भूमिका निभाई है।

कोच की जिम्मेदारी संभालने के बाद सबसे पहले तो उन्होंने टीम को एक सूत्र में पिरोया। दूसरी अहम बात यह रही कि भारतीय खिलाड़ियों पर कोई स्टाइल थोपने के बजाय उन्होंने उनकी स्टाइल को ही और विकसित करके आधुनिक हॉकी के अनुकूल बनाया। इसी का परिणाम है कि टीम की गोल जमाने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई है। ऑस्ट्रेलिया के हाथों 1–7 से मिली हार को छोड़ दें तो भारत ने इस ओलिंपिक में सभी टीमों के खिलाफ कम से कम तीन गोल जरूर जमाए।

सूडोकु नवताल-5319

मध्यम

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5318 का हल

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

अपना ब्लॉग

देश भर में कौशल विकास केंद्रों का जाल

मोहन। प्रधानमंत्री कौशल केंद्रों की स्थापना देश के हरेक जिले में अत्याधुनिक प्रशिक्षण केंद्र के तौर पर की गई है, जो उस जिले के दूसरे प्रशिक्षण केंद्रों के लिए मानक का काम कर सकें। देश भर में कौशल विकास केंद्रों का जाल बिछाने में लगभग 2500 प्रशिक्षण साझेदारों की भूमिका अहम रही है। यहां यह बता देना भी जरूरी होगा कि प्रशिक्षण केंद्रों की इस संख्या में वे प्रशिक्षण केंद्र शामिल नहीं हैं, जो सीधे–सीधे प्रांतों के कौशल विकास मिशन से जुड़े हैं। यानी लगभग नौ हजार की यह संख्या उन्हीं केंद्रों की है जो केंद्र सरकार द्वारा संचालित कौशल विकास योजनाओं में योगदान कर रहे हैं। इस योजना से देश भर के 40 लाख से अधिक युवा लाभान्वित हुए हैं, जिनमें से अठारह लाख से अधिक को कौशल प्रशिक्षण लेने के बाद रोजगार पाने में सफलता मिली है। प्रांतीय मिशनों तथा कौशल विकास की अन्य विभागीय योजनाओं में निश्चय ही और भी युवा लाभान्वित रहे होंगे।